Publication	**Dainik Savera Times**	**Language**	Hindi
Edition	Chandigarh	**Journalist**	
Date	03/04/2025	**Page no**	City pg 6
CCM	N/A		

त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी भारत को सहकारी क्षेत्र में बनाएगी ग्लोबल सुपर पावर : सतनाम सिंह संधू

त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी भारत को सहकारी क्षेत्र में बनाएगी ग्लोबल सुपर पावर : सतनाम सिंह संधू

राज्यसभा सांसद सतनाम सिंह संधू

सवेरा न्यूज / विजयपाल, मोहाली, 1 अप्रैल : त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी की स्थापना को भारत के सहकारी आंदोलन में एक नए युग की शुरूआत बताते हुए राज्यसभा सांसद सतनाम सिंह संधू ने कहा कि इस यूनिवर्सिटी की स्थापना से भारत सहकारी क्षेत्र में विश्व के विचारक अग्रणी के रूप में उभरेगा, जिससे भारत सहकारी क्षेत्र में एक वैश्विक महाशक्ति बन जाएगा। त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी विधेयक 2025 (बिल) पर चर्चा में भाग लेते हुए, जिसे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 1 अप्रैल को राज्यसभा में पेश किया था और 26 मार्च को लोकसभा द्वारा मंजूरी दिए जाने के बाद मंगलवार को उच्च सदन द्वारा पारित किया गया, पर राज्य सभा सांसद सतनाम सिंह संधू ने कहा कि गुजरात में ग्रामीण प्रबंधन संस्थान आनंद (आईआरएमए) के कैम्पस में स्थापित होने वाला यह यूनिवर्सिटी न केवल एक शैक्षणिक संस्थान होगा, बल्कि सहकारिता के लिए उत्कृष्टता का वैश्विक केंद्र होगा। उन्होंने कहा, यह दुनिया का पहला पूर्ण विकसित सहकारी डोमेन विशिष्ट यूनिवर्सिटी होगी, जहां सहकारी वित्त, कृषि-व्यवसाय, डिजिटल सहकारिता और स्टार्टअप पर विशेष पाठ्यक्रम संचालित किए जाएंगे। यह यूनिवर्सिटी अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ भी सहयोग करेगी, ताकि भारत की सहकारी संस्थाएं वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना सकें।

राज्यसभा सांसद ने कहा कि इस यूनिवर्सिटी की स्थापना से सहकारी क्षेत्र में नई ऊर्जा आएगी, पेशेवर मानव संसाधन तैयार होंगे, सक्षम नेतृत्व का सृजन होगा तथा विश्वस्तरीय शोध के साथ नए अवसर पैदा होंगे। उन्होंने कहा कि यह विधेयक सहकारी समितियों को सशक्त, संचालन को पारदर्शी और आधुनिक टेक्नोलॉजी को एकीकृत करेगा। भारत में सहकारिता का गौरवशाली इतिहास बताते हुए संधू ने कहा कि भले ही देश में पहला सहकारिता कानून 1904 में आया हो, लेकिन भारत में सहकारिता की जड़ें 200 साल से भी ज्यादा पुरानी हैं। सहकारिता के परिणामस्वरूप ही भारत की आर्थिक प्रगति और वित्तीय समावेशन संभव हो पाया है।

****

Downloaded from
SAMVAD